UPJSSR
CSSS

श्रृंगारिक प्रेम व्यंजना

डॉ0 आभा श्रीवास्तव*

काम परिष्कृत रूप में प्रेम है और प्रेम अपने मूल रूप में काम। काम एक प्रकार से चैतन्य की वृत्ति है और प्रेम उसका प्रकाश बनकर उजाला फैलाता है और श्रीकृष्ण ने भी गीता में धर्म से अविरूद्ध काम कहा है। भारतीय साहित्य में काम जनित प्रेम की शत्रुता की जिला प्रतिष्ठा हुई है उतना किसी अन्य दरों की साहित्य में नहीं जहां पर काम को सिर्फ शारीरिक भूख को शमन करने के लिए ही प्रयोग किया जाता बल्कि उसके पवित्रता स्वच्छता शुद्धता एवं आत्मीयता का ही महत्व दिया गया है। अगर मनोवैज्ञानिक दृष्टि से भी देखा जाय तो मन और आत्मा एक दूसरे के पूरक हैं जहां दोनों का मिलन स्थल है वही प्रेम है। इस प्रेम के सामने सबको झुकना पड़ता है। अतः जीवन को कोई भी मनोवेग इतना सशक्त और स्थिर नहीं जितना रति या प्रेम है क्योंकि मूल प्रवृत्ति होने के अतिरिक्त काम की मंगलमीय भावना से आच्छादित है। श्रृंगार का अर्थ कामोंद्रेक है जिसका अभिप्राय है हृदय में काम भावना का उदय होना। काम प्रवृत्ति का विकास जिसके आधार पर होता है वही श्रृंगार कहलाता है। अत एव श्रृंगार शब्द का अर्थ कामवृद्धि की प्राप्ति माना गया है। संसार के सभी साहित्य में श्रृंगार प्रेम की अधिकता ही उसकी सर्व श्रेष्ठता को प्रमाणित करती है। शुक्ल जी ने कहा है कि इस रस का इतना अधिक विस्तार हिन्दी साहित्य में हुआ कि इसमें एक–एक अंग को लेकर स्वतंत्र ग्रंथ रचे गये। श्री विष्णुशरपा इन्दू ने श्रृंगार की महिमा को प्रतिवादन करते हुए कहा है–श्रृंगार भावना की सबसे तापक प्रवृत्ति है क्योंकि प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप में देश विदेश की प्रत्येक भाषा के साहित्य का सबसे बड़ा भाग प्रेम और श्रृंगार की भावनाओं से ओत प्रोत है। प्रेम या रति भाव केवल मानव को ही नहीं अपितु प्राण मात्र को प्रभावित करता है। पशु, पक्षी, कीट, पतंग, जड़ चेतन, तरू में यह रतिभाव वर्तमान रहता है। आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र ने अपने साहित्य दर्पण में काम को उद्‌भव (अंकुरित होने को श्रृंग कहा और उसकी उत्पत्ति कारण उत्तम प्रकृति वाला श्रृंगार माना है)। वास्तविकता तो यह है कि जीवन की स्फुर्ति, सद्‌प्रेरणा, भक्ति धर्म, साहित्य और कला सभी के मूल में रति भाव की प्रेरणा विद्यमान है। क्योंकि धर्म अर्थ भी हिन्दू सभ्यता के संस्कृति का आधार है। यह भी धर्म एवं अर्थ की भांति मोक्ष का मार्ग प्रशस्त करता है। इसलिए कामगत प्रेम तो स्त्री पुरूष के उत्पत्ति के साथ ही प्रेम ही वह सत्य है जो श्रेष्ठ को निरंतरता प्रदान करता है, और करता रहेगा। प्रेम जीवनी शक्ति है, संसार का हर प्राणी ईश्वर को इस वरदान से विभूषित है तथा प्रेम के कारण ही मानव जाति अन्य प्राणियों से भिन्न है प्रेम अकाट्य तत्व है इसके अस्तित्व को किसी तरह नकारा नहीं जा सकता है। प्रेम की व्यंजना हिन्दी ही नहीं अन्य भाषाओं के कवियों ने की है वैदिक काल से लेकर आधुनिक काल तक के कवियों ने प्रेम को अपने काव्य का विषय बनाया है। प्रेम का स्वरूप समय के साथ भले ही परिवर्तित होता जाय किन्तु जब तक कवि का अनुभूति है अभिव्यक्ति होती रहेगी। अतः साहित्य के सभी वर्गों के कवियों ने प्रेम की व्यंजना अपने काव्यों में किया है

चाहे श्रृंगारिक कवि हों, यथार्थवादी कवि हों, या भक्तिरस के कवि हों प्रेम की अमरता को दर्शाने के लिए अपने काव्यों को छन्दोबद्ध किया और सहृदय से पाठक में भी प्रेम की उत्पत्ति करता